Curriculum and Credit Framework
As per NEP 2020

For

Program name
Undergraduate Sanskrit (Multidisciplinary)
Revised Syllabus
(To be effective from the Academic Session 2026)

Department of Indian knowledge and language
Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 Of 2017)

स्नातक (संस्कृत) - पृष्ठभूमि

स्नातक (संस्कृत) पाठ्यक्रम भारतीय ज्ञान-परंपरा, भाषा और संस्कृति की समृद्ध विरासत को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने और प्रसारित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन, साहित्य, विज्ञान, नीति एवं जीवन-मूल्यों का आधार है, जिसका प्रभाव आज भी वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना, साहित्यिक परंपरा एवं दार्शनिक गहराइयों से परिचित कराना है, ताकि वे न केवल शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन कर सकें, बल्कि उनकी समकालीन प्रासंगिकता को भी समझ सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करे। इसमें परंपरागत विषयों के साथ-साथ आधुनिक एवं रोजगारोन्मुखी घटकों—जैसे अनुवाद, संचार कौशल, भाषाविज्ञान, सृजनात्मक लेखन, पत्रकारिता एवं शोध-अभिव्यक्ति—को भी सम्मिलित किया गया है।

स्नातक (संस्कृत) के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षण, अनुवाद, जनसंचार, राजभाषा, प्रशासन एवं शोध जैसे विविध क्षेत्रों में अपने करियर का निर्माण कर सकते हैं। साथ ही, यह पाठ्यक्रम उनमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता, नैतिक दृष्टि एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है।

अतः यह पाठ्यक्रम परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का एक सशक्त माध्यम है, जो विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों से संपन्न बनाकर उन्हें वैश्विक परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बनने के लिए तैयार करता है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य भारतीय सभ्यता की दीर्घकालीन ज्ञान-परंपरा में निहित है। संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है, जिसमें वेद, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष एवं नाट्यशास्त्र जैसे विविध विषयों का व्यापक साहित्य उपलब्ध है। यह भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि भारतीय समाज के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक जीवन की आधारशिला भी रही है।

ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत ने प्राचीन भारत में शिक्षा, धर्म, दर्शन और शासन-व्यवस्था को दिशा प्रदान की। गुरुकुल परंपरा से लेकर प्राचीन विश्वविद्यालयों तक, संस्कृत ज्ञान के संवहन का प्रमुख माध्यम रही। समय के साथ-साथ इस भाषा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं साहित्यिक परंपराओं को प्रभावित किया, जिससे एक समृद्ध सांस्कृतिक एकता का विकास हुआ।

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भारतीय जीवन-मूल्यों, आचार-विचार, परंपराओं और लोकाचार का वाहक है। इसमें निहित ग्रंथ मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सत्यं वद, धर्मं चर" जैसे आदर्श आज भी वैश्विक मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

आधुनिक युग में भी संस्कृत की प्रासंगिकता बनी हुई है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में विश्वभर में इसकी महत्ता बढ़ रही है। इस संदर्भ में बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल अतीत की समृद्ध विरासत से जोड़ता है, बल्कि उन्हें वर्तमान और भविष्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सक्षम बनाता है।

इस प्रकार, यह पाठ्यक्रम ऐतिहासिक गहराई और सांस्कृतिक समृद्धि के समन्वय के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान, मूल्य और वैश्विक दृष्टि का विकास करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की मूलभूत एवं उन्नत व्याकरणिक संरचना का ज्ञान प्रदान करना।
- संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं–काव्य, नाटक, गद्य, महाकाव्य एवं शास्त्रीय ग्रंथों–से परिचित कराना।
- भारतीय ज्ञान-परंपरा, दर्शन एवं सांस्कृतिक मूल्यों की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
- संस्कृत भाषा के माध्यम से नैतिक मूल्यों एवं मानवीय संवेदनाओं को सुदृढ़ करना।
- पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाते हुए अनुवाद, पत्रकारिता, संचार कौशल एवं सृजनात्मक लेखन में दक्षता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को शोध-पद्धति एवं अकादमिक लेखन के लिए तैयार करना।
- संस्कृत को आधुनिक संदर्भों–जैसे तकनीकी, मीडिया एवं प्रशासन–से जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए सक्षम बनाना।
- भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

Programme Educational Objectives (PEOs)

- PO1: संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं साहित्य की मूलभूत एवं उन्नत समझ विकसित करना।
- PO2: भारतीय ज्ञान-परंपरा, दर्शन एवं सांस्कृतिक विरासत का सम्यक् ज्ञान प्रदान करना।
- PO3: विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं तार्किक दृष्टिकोण का विकास करना।
- PO4: प्रभावी संप्रेषण कौशल (मौखिक एवं लिखित) का विकास करना।
- PO5: पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाते हुए अनुवाद, पत्रकारिता एवं संचार कौशल में दक्षता प्रदान करना।
- PO6: शोध-पद्धति एवं अकादमिक लेखन की क्षमता विकसित करना।
- PO7: नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास करना।
- PO8: विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए तैयार करना।

Programme Outcomes (POs) – B.A. Sanskrit

बी.ए. (संस्कृत) कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताएँ एवं गुण अर्जित करेंगे–

- **PO1: भाषा दक्षता (Language Proficiency)**
  संस्कृत भाषा के व्याकरण, शब्दावली एवं शुद्ध प्रयोग में दक्षता प्राप्त करना।
- **PO2: साहित्यिक ज्ञान (Literary Competence)**
  संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं–काव्य, नाटक, गद्य एवं महाकाव्य–का सम्यक् ज्ञान एवं विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- **PO3: दार्शनिक एवं सांस्कृतिक समझ (Philosophical & Cultural Understanding)**
  भारतीय दर्शन, परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों की गहन समझ विकसित करना।
- **PO4: आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता (Critical Thinking)**
  शास्त्रीय ग्रंथों का तार्किक, आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करना।
- **PO5: संप्रेषण कौशल (Communication Skills)**
  संस्कृत सहित अन्य भाषाओं में प्रभावी मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
- **PO6: रोजगारोन्मुखी दक्षता (Employability Skills)**
  अनुवाद, पत्रकारिता, जनसंचार, कार्यालयी कार्य एवं सृजनात्मक लेखन जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक कौशल प्राप्त करना।
- **PO7: शोध एवं अकादमिक क्षमता (Research Aptitude)**
  प्रारंभिक शोध-पद्धति, संदर्भ लेखन एवं अकादमिक अभिव्यक्ति में दक्षता विकसित करना।
- **PO8: नैतिक एवं मानवीय मूल्य (Ethical & Human Values)**
  सत्य, अहिंसा, कर्तव्यनिष्ठा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों का विकास करना।

Programme Specific Outcomes (PSOs) – B.A. Sanskrit

बी.ए. (संस्कृत) कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी निम्नलिखित विषय-विशिष्ट दक्षताएँ अर्जित करेंगे–

- **PSO1**: भाषा एवं व्याकरण दक्षता- संस्कृत भाषा की संरचना–संधि, समास, कारक, धातु-रूप आदि–का शुद्ध एवं प्रभावी प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- **PSO2:** शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन एवं व्याख्या- वेद, उपनिषद, महाकाव्य, नाटक एवं अन्य शास्त्रीय ग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन, अनुवाद एवं व्याख्या करने की क्षमता विकसित करेंगे।
- **PSO3:** साहित्यिक एवं दार्शनिक विश्लेषण- संस्कृत साहित्य एवं भारतीय दर्शन के विविध आयामों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- **PSO4:** अनुप्रयुक्त संस्कृत (Applied Sanskrit)- अनुवाद, कार्यालयी संस्कृत, पत्रकारिता, सृजनात्मक लेखन एवं जनसंचार के क्षेत्र में संस्कृत के व्यावहारिक उपयोग में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- **PSO5:** शोध एवं अकादमिक लेखन कौशल- शोध-पद्धति, संदर्भ लेखन, लेख/प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल में प्रवीणता प्राप्त करेंगे।

- **PSO6**: सांस्कृतिक एवं नैतिक दृष्टि- भारतीय संस्कृति, परंपरा एवं मानवीय मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनेंगे।
- **PSO7:** बहुविषयी समन्वय क्षमता- संस्कृत ज्ञान को भाषा-विज्ञान, इतिहास, दर्शन, योग, आयुर्वेद एवं अन्य आधुनिक विषयों के साथ जोड़ने की क्षमता विकसित करेंगे।
- **PSO8:** व्यावसायिक एवं करियर उन्मुखता- शिक्षण, अनुवाद, मीडिया, प्रशासन, राजभाषा एवं शोध जैसे क्षेत्रों में करियर निर्माण हेतु आवश्यक कौशल अर्जित करेंगे।

योग्यता

बी.ए. (संस्कृत) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निम्नलिखित योग्यताएँ निर्धारित हैं–

- अभ्यर्थी ने किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 (सीनियर सेकेंडरी) परीक्षा उत्तीर्ण की हो।
- 12वीं कक्षा में संस्कृत विषय का अध्ययन किया हो (कुछ विश्वविद्यालयों में यह अनिवार्य/वांछनीय हो सकता है)।
- न्यूनतम अंक (आमतौर पर 50%) विश्वविद्यालय/संस्थान के नियमानुसार निर्धारित हैं।
- आरक्षित वर्ग (SC/ST/OBC आदि) के अभ्यर्थियों को नियमानुसार अंकों में छूट प्रदान की जाएगी।

करियर के अवसर

दुनिया भर में हमारी संस्कृत भाषा को महत्वपूर्ण महत्त्व स्थान दिए जाने के कारण इसमें रोजगार के कई अवसर है संस्कृत साहित्य में कुछ नौकरियां निम्नलिखित हैं जो आपके लिए मददगार हो सकती है

- भारतीय सेना में धर्माधिकारी की नियुक्ति में सहायक ।
- समाज में धार्मिक कार्यों के लिए संस्कृत भाषा की आवश्यकता।
- विभिन्न धार्मिक स्थलों के लिए धर्मगुरु पुजारी हेतु।
- पत्रकारिता, रेडियो, जन संचार माध्यमों में संस्कृत भाषा में रोजगार के अवसर।
- संस्कृत अनुवादक, शोधकर्ता तथा अभिलेख एवं पांडुलिपी क्षेत्र में रोजगार के अवसर।
- योग शिक्षक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- आयुर्वेद चिकित्सा, वास्तु-सलाहकार के रूप में भी संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- कथा वाचक एवं उपदेशक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।

BA Sanskrit (Multidisciplinary)

Scheme of Programme

(Scheme UG A1: Undergraduate Programmes)

Semester 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
						Core Course(s)								
CC-A01	संस्कृत पद्य साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

Semester 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A02	संस्कृत नाट्य साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

Semester 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
						Core Course(s)								
CC-A03	संस्कृत गद्य साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

Semester 4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
						Core Course(s)								
CC-A04	संस्कृत कथा साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

Semester 5

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A05	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

Internship is to be done during summer break after 4th Semester, Marks will be added in 5th Semester.

Semester 6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A06	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

The curriculum of semester 7 and 8 will is provided in due course of time.

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CCA1	**संस्कृत पद्य साहित्य**	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

संस्कृत पद्य साहित्य पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत काव्य-परंपरा की समृद्धि, विविधता एवं सौंदर्य से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत महाक़ाव्य, खण्डकाव्य तथा गीतिकाव्य जैसी प्रमुख काव्य-विधाओं का चयनित अंशों के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है, जिससे विद्यार्थी शास्त्रीय साहित्य की गहराई को समझ सकें। यह पाठ्यक्रम केवल साहित्यिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निहित सांस्कृतिक, नैतिक एवं दार्शनिक तत्वों की भी व्याख्या की जाती है। विद्यार्थी काव्य के माध्यम से भारतीय जीवन-दृष्टि, प्रकृति-चित्रण, प्रेम, करुणा, वीरता एवं अन्य मानवीय भावों को समझने में सक्षम होते हैं।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:-

- विद्यार्थियों का संस्कृत पद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं से परिचित ।
- प्रसिद्ध कवियों (कालिदास, भारवि, माघ, जयदेव आदि) के काव्यों के माध्यम से काव्य-परंपरा की समझ का विकास।
- पद्य साहित्य के माध्यम से भाषा की सौंदर्यात्मकता, लय, छंद एवं अलंकारों का ज्ञान
- विद्यार्थियों में काव्य-पाठ, व्याख्या एवं भावार्थ करने की क्षमता का विकास।
- काव्य में निहित सांस्कृतिक, नैतिक एवं दार्शनिक तत्वों की पहचान एवं समझ का विकास।

पाठ्यक्रम :-

इकाई 1: रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग (1 - 30 श्लोक)

इकाई 2: रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग (31- 60 श्लोक)

इकाई 3: कुमारसम्भवम, पञ्चम सर्ग (1 -29)

इकाई 4

(क) कालिदास के महाकाव्यों का सामान्य परिचय

(ख) महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में विद्यमान चरित -

- **रघुवंशम् के प्रमुख चरित** -राजा दिलीप, राजा रघु, सुदक्षिणा,
- **कुमारसंभवम् के प्रमुख चरित** - पार्वती, शिव, कामदेव, कार्तिकेय

संदर्भ- ग्रंथ :

1. कालिदास। (2018). रघुवंशम् (सम्पा. रामचन्द्र शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. कालिदास। (2015). रघुवंशम् (हिंदी व्याख्या सहित). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. कालिदास। (2012). रघुवंशम् (अनुवाद सहित). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
4. उपाध्याय, बलदेव। (2014). संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
5. गैरोला, वाचस्पति। (2010). संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
6. काले, एम. आर. (सम्पा.). (2016). कुमारसंभवम्। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. पाण्डेय, रामचन्द्र. (2018). महाकवि कालिदास और कुमारसंभव। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
8. शर्मा, रमाशंकर. (2015). कालिदास साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।
9. द्विवेदी, कपिलदेव. (2012). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. मिश्र, जगन्नाथ पाठक. (2017). कालिदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
11. त्रिपाठी, कृष्णमणि. (2019). कुमारसंभवम् : एक अध्ययन। दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
12. सिंह, शिवबालक. (2016). संस्कृत महाकाव्य परंपरा और कालिदास। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

पाठ्यक्रम का परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताएँ एवं दक्षताएँ अर्जित करेंगे–

- संस्कृत पद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं–महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं गीतिकाव्य–की मूलभूत समझ विकसित करेंगे।
- चयनित श्लोकों का शुद्ध पाठ, शब्दार्थ, भावार्थ एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- काव्य में निहित सांस्कृतिक, नैतिक एवं दार्शनिक तत्वों को समझने एवं व्याख्यायित करने की क्षमता विकसित करेंगे।
- संस्कृत काव्यों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- काव्य के अध्ययन से साहित्यिक रुचि एवं सृजनात्मक लेखन की क्षमता विकसित होगी।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है- 16 अंक
- इकाई 1 में विद्यमान 4 श्लोक में से 2 श्लोक की सप्रसंग व्याख्या करें-12 अंक
- इकाई 2 में विद्यमान 4 श्लोक में से 2 श्लोक की सप्रसंग व्याख्या करें- 12 अंक
- इकाई 3 में विद्यमान 4 श्लोक में से 2 श्लोक की सप्रसंग व्याख्या करें- 12 अंक
- इकाई 4 (क) से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न करें- 6 अंक
- इकाई 4 (ख) से 4 में से 2 पत्रों का परिचय दें - 12 अंक

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A2	संस्कृत नाट्य साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

1. पाठ्यक्रम विवरण

संस्कृत नाट्य साहित्य पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय नाट्य परंपरा, उसकी संरचना, सिद्धांत एवं सौंदर्यबोध से परिचित कराना है। विद्यार्थी *नाट्यशास्त्र* के सिद्धांतों–रस, भाव, अभिनय, संरचना, अंक-विन्यास आदि–को समझते हैं तथा नाट्य के साहित्यिक एवं रंगमंचीय दोनों पक्षों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह पाठ्यक्रम केवल पाठ्य अध्ययन तक सीमित न होकर संवाद-प्रस्तुति, अभिनय-तत्व एवं नाटकीय अभिव्यक्ति पर भी बल देता है। इस प्रकार, यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को संस्कृत नाट्य परंपरा की गहराई से परिचित कराते हुए उनकी सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति कौशल एवं सांस्कृतिक समझ का विकास करता है।

2. पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- संस्कृत नाट्य साहित्य की परंपरा एवं विकास से परिचय।
- प्रमुख नाटककारों (भास, कालिदास, भवभूति आदि) एवं उनकी कृतियों का अध्ययन।
- नाट्यशास्त्र के मूल सिद्धांतों–रस, भाव, अभिनय एवं संरचना–की समझ का विकास।
- नाट्य-पाठ, संवाद-प्रस्तुति एवं व्याख्या कौशल का विकास।
- नाटकों में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को समझाना।
- साहित्यिक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- नाट्य साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता से अवगत।

पाठ्यक्रम :-

इकाई-1: नाट्य साहित्य का इतिहास

- संस्कृत नाट्य साहित्य का सामान्य परिचय
- नाट्य साहित्य का ऐतिहासिक विकास
- प्रमुख नाटककारों का परिचय–
    - भास - व्यक्तित्व एवं कृतित्व
    - कालिदास - व्यक्तित्व एवं कृतित्व
    - शूद्रक - व्यक्तित्व एवं कृतित्व
    - भवभूति - व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई-2: दूतवाक्यम् (भास)

- कवि भास का जीवन एवं साहित्यिक योगदान
- नाटक की कथावस्तु का परिचय
- आलोचनात्मक प्रश्नों के माध्यम से विश्लेषण
- प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

इकाई-3: नाट्य साहित्य की पारिभाषिक शब्दावली का परिचय

- नान्दी - मंगलाचरण/आशीर्वचन
- सूत्रधार - नाटक का संचालक एवं निर्देशक
- प्रस्तावना - नाटक का प्रारंभिक परिचय भाग
- प्रवेशक - अंकों के बीच का जोड़ने वाला अंश
- विदूषक - हास्य उत्पन्न करने वाला पात्र
- नेपथ्य - मंच के पीछे का भाग (backstage)
- कंचुकी - राजकीय सेवक/सहायक पात्र
- विषकम्भक - मुख्य कथा से पूर्व का सहायक प्रसंग
- भरतवाक्य - नाटक के अंत में दिया जाने वाला मंगल वचन

इकाई 4: नाट्यशास्त्र का परिचय

- भरतमुनि का नाट्यशास्त्र - सामान्य परिचय
- नाट्य की परिभाषा एवं उद्देश्य
- नवरस का संक्षिप्त वर्णन
- अभिनय के प्रकार - आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्त्विक

संदर्भ ग्रंथ :

1. भास। (2012). दूतवाक्यम्। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
2. धनंजय। (2010). दशरूपकम्। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
3. भरतमुनि। (2018). नाट्यशास्त्रम् (सम्पा. रामकृष्ण कवि)। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
4. भरतमुनि। (2016). भरत का नाट्यशास्त्र (हिंदी व्याख्या सहित, अनुवादक: बाबूलाल शुक्ल)। दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन।
5. शर्मा, रामजी उपाध्याय। (2014). नाट्यशास्त्र का इतिहास और सिद्धांत। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
6. नौटियाल, चक्रधर 'हंस' शास्त्री। (2015). बृहद् अनुवाद चंद्रिका। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. धनंजय। (2011). दशरूपकम् (धनिककृत 'अवलोक' टीका सहित)। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
8. कीथ, ए. बी. (1970). संस्कृत नाटक (अनुवाद)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
9. घोष, मनमोहन। (1951). The Nāṭyaśāstra (Vol. 1-2). Calcutta: Asiatic Society।
10. पाण्डेय, रामचन्द्र। (2010). संस्कृत नाट्य साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
11. उपाध्याय, बलदेव। (2015). संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।

पाठ्यक्रम का परिणाम

- विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य की मूलभूत अवधारणाओं एवं परंपरा को समझ सकेंगे।
- प्रमुख संस्कृत नाटकों के चयनित अंशों का अध्ययन, अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।

- नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों–रस, भाव, अभिनय एवं संरचना–का विश्लेषण कर सकेंगे।
- संवाद-पाठ एवं प्रस्तुति में आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति कौशल विकसित करेंगे।
- नाटकों में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक तत्वों की पहचान कर सकेंगे।
- संस्कृत नाट्य साहित्य का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित करेंगे।
- अभिनय एवं रंगमंच के प्रति प्रारंभिक समझ एवं रुचि विकसित होगी।

दिशा -निर्देश:

- -सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ट प्रश्न अनिवार्य हैं -16 अंक
- -इकाई 1 से 4 में से 2 का परिचय लिखें - 12 अंक
- -इकाई 2 में से 4 में से 2 पद्य की सप्रसंग व्याख्या करें - 14अंक
- -इकाई 2 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न्न करें - 8 अंक
- -इकाई 3 से 6 में से 3 पारिभाषिक शब्द लिखें- 12 अंक
- -इकाई 4 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न्न करें - 8 अंक

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A03	संस्कृत गद्य साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

संस्कृत गद्य साहित्य पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य की समृद्ध परंपरा, शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम में प्रमुख गद्यकारों–जैसे बाणभट्ट, दंडी, सुबन्धु आदि–की कृतियों के चयनित अंशों का अध्ययन कराया जाता है, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य की विविध शैलियों (आलंकारिक, सरस, वर्णनात्मक) का ज्ञान प्राप्त होता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को गद्य-पाठ, अनुवाद, व्याख्या तथा भाव-बोध की क्षमता विकसित करने में सहायक है। साथ ही, इसमें निहित ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्षों को समझने का अवसर भी प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- संस्कृत गद्य साहित्य की परंपरा एवं विकास से परिचित कराना।
- प्रमुख गद्यकारों (बाणभट्ट, दंडी, सुबन्धु आदि) एवं उनकी कृतियों का अध्ययन कराना।
- गद्य-पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या कौशल का विकास करना।
- गद्य की विभिन्न शैलियों एवं भाषा-वैशिष्ट्य को समझाना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- गद्य साहित्य में निहित सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक तत्वों की समझ विकसित करना।
- अभिव्यक्ति एवं लेखन कौशल को सुदृढ़ करना।
- संस्कृत गद्य की समकालीन प्रासंगिकता से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम:

इकाई 1: गद्य साहित्य का परिचय

- संस्कृत गद्य साहित्य की परिभाषा एवं स्वरूप
- गद्य के प्रकार एवं विशेषताएँ

इकाई 2 प्रमुख गद्यकार:

बाणभट्ट, दंडी, सुबन्धु, अम्बिकादत्त व्यास, धनपाल

इकाई 3: शुकनासोपदेश

- शुकनासोपदेश – **आरम्भ से "उपसृष्टा एव क्षुद्रापिष्ठितभवनाः " तक**
- शुकनासोपदेश का सारांश
- लक्ष्मी की विशेषताएं एवं चरित्र - चित्रण
- चन्द्रापीड का चरित्र-चित्रण
- शुकनास का चरित्र-चित्रण

इकाई 4: शिवराजविजय

शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास): **आरम्भ से "इति कथयित्व तुष्णी -भवतरस्थे " तक।**
प्रथम निःश्वास का सारांश
शिवराजविजय के पात्रों का परिचय

- शिवाजी महाराज
- गौरसिंह
- श्यामसिंह
- ब्रह्मचारी गुरु
- योगीराज

संदर्भ ग्रन्थ

1. कुमार, प्रहलाद। शुकनासोपदेश। दिल्ली: मेहरचंद लक्ष्मणदास।
2. भानुचन्द्र। शुकनासोपदेश (संस्कृत टीका तथा हिंदी व्याख्या सहित)। दिल्ली: प्रकाशक।
3. शर्मा, रामनाथ 'सुमन' (व्याख्याकार)। (1968). शुकनासोपदेश। दिल्ली: साहित्य भंडार।
4. व्यास, अंबिकादत्त। शिवराजविजयम् (सं. रामाशंकर मिश्र)। वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
5. शास्त्री, रामपाल। शुकनासोपदेश। वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।

6. झा, रमाकांत। शुकनासोपदेश। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
7. मिश्र, देवनारायण। शिवराजविजयम्। मेरठ: साहित्य भंडार।
8. शर्मा, उमाशंकर। संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा भारती अकादमी।
9. (हिंदी अनुवाद: मंगलदेव शास्त्री, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास)

अतिरिक्त संदर्भ

1. उपाध्याय, बलदेव। संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: शारदा निकेतन।
2. गोयल, प्रीतिभा। संस्कृत साहित्य का इतिहास। जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार।
3. पाठक, राधावल्लभ। संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. (हिंदी अनुवाद सहित उपलब्ध)

पाठ्यक्रम का परिणाम

- विद्यार्थी संस्कृत गद्य साहित्य की मूलभूत अवधारणाओं एवं परंपरा को समझ सकेंगे।
- चयनित गद्यांशों का शुद्ध पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- गद्य की विभिन्न शैलियों एवं भाषा-विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रमुख गद्यकारों एवं उनकी कृतियों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- गद्य साहित्य में निहित सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक पक्षों को समझ सकेंगे।
- आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
- संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति एवं लेखन कौशल में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- शास्त्रीय गद्य साहित्य की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

दिशा -निर्देश:

- सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य हैं -16 अंक
- इकाई 1 से 4 में से 2 प्रश्न करें -14 अंक
- इकाई 2 से 4 में से 2 का परिचय लिखें -12 अंक
- इकाई 3 से 4 में से 2 गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें -12 अंक
- इकाई 4 से चार में से दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें - 8 अंक
- इकाई 3 और 4 में से 2 में से 1 प्रशन करें -8 अंक

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A4	संस्कृत कथा साहित्य	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत कथा साहित्य की समृद्ध परंपरा, उसकी शैली, उद्देश्य एवं सांस्कृतिक महत्त्व से विद्यार्थियों को परिचित कराता है। इसमें *हितोपदेश* एवं *पंचतंत्र* जैसी प्रसिद्ध नीतिकथाओं के चयनित प्रसंगों का अध्ययन कराया जाता है, जिनमें जीवन-मूल्य, नैतिक शिक्षा, बुद्धि, चातुर्य एवं व्यवहारिक ज्ञान का सुंदर समन्वय मिलता है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में कथा-पाठ, अनुवाद, व्याख्या एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित करता है तथा उन्हें व्यावहारिक जीवन में नीति और आचरण की समझ प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- संस्कृत कथा साहित्य की परंपरा एवं स्वरूप से परिचित कराना।
- प्रमुख कथा-साहित्यकारों (नारायण पंडित, विष्णु शर्मा, पं० क्षमाराव) का ज्ञान प्रदान करना।
- हितोपदेश एवं पंचतंत्र की चयनित कथाओं के माध्यम से नैतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान विकसित करना।
- कथा-पाठ, शब्दार्थ, भावार्थ एवं व्याख्या कौशल का विकास करना।
- विद्यार्थियों में तर्क, बुद्धि एवं निर्णय-क्षमता का विकास करना।
- कथा साहित्य में निहित सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों को समझाना।
- आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

पाठ्यक्रम:

इकाई-1 : संस्कृत कथा साहित्य का स्वरूप एवं विकास

- संस्कृत कथा साहित्य का परिचय: स्वरूप, विशेषताएँ एवं महत्व
- संस्कृत साहित्य में कथाकाव्य की परंपरा
- कथाकाव्य की उत्पत्ति एवं विकास

इकाई-2 : हितोपदेश (चयनित कथाएँ)

- चित्रग्रीव–हिरण्यक कथा
- वृद्धव्याघ–लुब्धपथिक कथा
- चित्रांग–सुबुद्धि एवं क्षुद्रबुद्धि कथा
- जरद्गव–दीर्घकर्ण कथा

इकाई-3 : पंचतंत्र (चयनित कथाएँ)

- बुद्धिर्यस्य बलं तस्य
- नीलवर्ण: श्रृंगाल
- शशकस्य चातुर्यम्
- न शिष्योपदिश्यते

इकाई-4 : प्रमुख कथा साहित्यकार

- **विष्णुशर्मा:** पंचतंत्र (नीति कथाएँ)
- **नारायण पंडित:** हितोपदेश
- **गुणाढ्य:** बृहत्कथा
- **सोमदेव:** कथासरित्सागर

संदर्भ ग्रन्थ

मुख्य ग्रंथ

1. नारायण पण्डित। (2015). हितोपदेश (सम्पा. प्रो. बालशास्त्री)। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
2. नारायण पण्डित। हितोपदेश (सम्पा. पण्डित जीवनानन्द विद्यासागर)। कोलकाता: सरस्वती प्रेस।
3. विष्णु शर्मा। (1975). पञ्चतन्त्र (व्याख्या: श्यामाचरण पाण्डेय)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. Kale, M. R. (1999). Pañcatantra (Ed. & Trans.). Delhi: Motilal Banarsidass।
5. Rajan, Chandra. Panchatantra (Translation). New Delhi: Penguin Classics / Penguin Books।

अतिरिक्त संदर्भ

1. त्रिपाठी, रमाशंकर। संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास। वाराणसी: कृष्णदास अकादमी।
2. शर्मा, उमाशंकर 'ऋषि'। संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
3. उपाध्याय, बलदेव। संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. Edgerton, Franklin & Hertel, Johannes (Eds.). (1908). A Collection of Ancient Hindu Tales.
5. Krishnamachariar, M. History of Classical Sanskrit Literature. Delhi: Motilal Banarsidass।
6. Dasgupta, S. N. (1977). A History of Sanskrit Literature: Classical Period. Calcutta: University of Calcutta।
7. Keith, A. B. A History of Sanskrit Literature.
   (हिंदी अनुवाद: मंगलदेव शास्त्री, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास)

पाठ्यक्रम का परिणाम

- विद्यार्थी संस्कृत कथा साहित्य की मूलभूत अवधारणाओं एवं परंपरा को समझ सकेंगे।
- हितोपदेश एवं पंचतंत्र की चयनित कथाओं का पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- कथाओं में निहित नैतिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक मूल्यों की पहचान कर सकेंगे।

- प्रमुख कथा-साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थियों में तर्कशक्ति, निर्णय-क्षमता एवं व्यावहारिक बुद्धि का विकास होगा।
- कथा साहित्य का आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण कौशल में सुधार होगा।
- शास्त्रीय कथाओं की आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

दिशा- निर्देश:

- सभी इकाइयों से आठ वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16 अंक
- इकाई 1 से 4 में से 2 प्रश्न -10 अंक
- इकाई 2 से 4 में से 2 कथा का सारांश -16 अंक
- इकाई 3 से 4 में से 2 कथा का सारांश -16 अंक
- इकाई 4 से 3 में से 2 का परिचय लिखें - 12 अंक

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 5

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A5	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं– उपजीव्य काव्यों: रामायण, महाभारत तथा पुराण, दर्शन तथा व्याकरण–के ऐतिहासिक एवं वैचारिक विकास का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें विद्यार्थियों को संस्कृत शास्त्रों की प्रमुख कृतियों, उनके रचनाकारों तथा उनके सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक महत्व से परिचित परिचय करता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से

भारतीय दर्शन की प्रमुख धाराओं–सांख्य, योग, वैशेषिक एवं चार्वाक–का ऐतिहासिक एवं सिद्धांतात्मक अध्ययन किया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों में दार्शनिक चिंतन की समझ विकसित हो सके। व्याकरण शास्त्र के विकास, विशेषतः पाणिनि, कात्यायन एवं वरदराज के योगदान का विश्लेषण किया जाएगा, जो संस्कृत भाषा के वैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट करता है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

- संस्कृत शास्त्रों की प्रमुख धाराओं का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।
- पुराण, दर्शन, एवं व्याकरण साहित्य की परंपरा से परिचित कराना।

- प्रमुख ग्रंथों एवं आचार्यों के योगदान का विश्लेषण करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम:

इकाई 1: उपजीव्य काव्यों का इतिहास

(क) रामायण

- रामायण का परिचय
- रामायण का सांस्कृतिक एवं नैतिक महत्व

(ख) महाभारत

- महाभारत का परिचय
- महाभारत का दार्शनिक एवं सामाजिक महत्व

(ग) पुराण साहित्य

- पुराणों का परिचय
- पुराणों का स्वरूप एवं लक्षण (पंचलक्षण)

इकाई 2: दर्शन शास्त्र का इतिहास

- भारतीय दर्शन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
- षड्दर्शन का परिचय

इकाई 3: व्याकरण शास्त्र का इतिहास

- प्राचीन- अर्वाचीन (आधुनिक) व्याकरण शास्त्र का इतिहास
- प्रमुख व्याकरणाचार्य: पाणिनि, पतञ्जलि

इकाई–4 : संस्कृत साहित्यशास्त्र का संक्षिप्त परिचय

- संस्कृत साहित्यशास्त्र ; अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा
- साहित्यशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास
- संस्कृत साहित्यशास्त्र के प्रमुख आचार्यों एवं उनकी रचनाओं का परिचय – भामह, दंडी, मम्मट एवं विश्वनाथ

संदर्भ ग्रंथ

मुख्य ग्रंथ

1. पतञ्जलि, योगसूत्र, गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. ईश्वरकृष्ण,सांख्यकारिका,वाराणसी: चौखम्बा।
3. कणाद,वैशेषिकसूत्र, वाराणसी: चौखम्बा।
4. जयन्त भट्ट,चार्वाक दर्शन (तत्वोपप्लवसिंह आदि के आधार पर)। वाराणसी: चौखम्बा।
5. भरतमुनि, (2018). नाट्यशास्त्रम् (सम्पा. रामकृष्ण कवि)। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
6. मम्मट (2016). काव्यप्रकाश (व्याख्यासहित),वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
7. विश्वनाथ (2015). साहित्यदर्पण, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. आनंदवर्धन (2017). ध्वन्यालोक, वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
9. भामह (2014). काव्यालंकार, दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।
10. दंडी (2015). काव्यादर्श, वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
11. पाणिनि (2016). अष्टाध्यायी, वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
12. पतञ्जलि (2017). महाभाष्यम्, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
13. वरदराज (2013). लघुसिद्धान्तकौमुदी, वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
14. शास्त्री, चन्द्रधर (2012). संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
15. वाल्मीकि (2018). श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण। गोरखपुर: गीता प्रेस।
16. व्यास। (2019). महाभारत। गोरखपुर: गीता प्रेस।

सहायक ग्रंथ

1. उपाध्याय, बलदेव। (2018). संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: शारदा निकेतन।
2. द्विवेदी, कपिलदेव। (2016). संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. शर्मा, रामजी उपाध्याय। (2015). भारतीय दर्शन। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
4. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। (2017). भारतीय दर्शन (भाग 1-2)। नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
5. मिश्र, उमेश। (2014). भारतीय दर्शन का इतिहास। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
6. पाण्डेय, हजारीप्रसाद। (2013). भारतीय संस्कृति के आधार। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. जोशी, लक्ष्मणशास्त्री। (2015). पुराण विमर्श। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

8. अग्रवाल, वासुदेवशरण। (2011). पुराण धर्म एवं संस्कृति। नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।

अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

- संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं की ऐतिहासिक समझ प्राप्त करेंगे।
- महाकाव्य, पुराण एवं दर्शन साहित्य के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- प्रमुख आचार्यों के योगदान का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
- पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित कर सकेंगे।

दिशा- निर्देश:

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है-16
- इकाई 1 (क) में से 2 में से 1 प्रश्न करें -8
- इकाई 1 (ख) में से 2 में से 1 प्रश्न करें -8
- इकाई 1 (ग) में से 2 में से 1 प्रश्न करें -8
- इकाई 2 में से 2 में से 1 प्रश्न करें – 8
- इकाई 3 में से 2 में से 1 प्रश्न करें -8
- इकाई 4 में से 4 में से 2 टिप्पणी करें -14

BA Sanskrit (Multidisciplinary)
Semester - 6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC - A6	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय	Revised	3	1	-	3	1	-	4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह इकाई वैदिक साहित्य की मूल प्रकृति, संरचना और ऐतिहासिक विकास का परिचय प्रदान करती है। इसमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की संहिताओं के साथ-साथ ब्राह्मण; आरण्यक एवं उपनिषदों का संक्षिप्त अध्ययन सम्मिलित है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत वैदिक साहित्य के भाषाई, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आयामों का विश्लेषण किया जाता है। इसमें वैदिक मंत्रों की संरचना, देवताओं की अवधारणा, यज्ञ परंपरा, तथा जीवन-दर्शन को समझने का प्रयास किया जाता है। साथ ही, वैदिक साहित्य की भारतीय संस्कृति में भूमिका और उसकी आधुनिक समय में प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला जाता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- वैदिक साहित्य की मूल संरचना एवं वर्गीकरण (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद) का ज्ञान।
- चारों वेदों के स्वरूप एवं विशेषताओं से परिचित।
- वैदिक धर्म, यज्ञ परंपरा एवं देवताओं की अवधारणा को समझाना।
- वैदिक साहित्य के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक महत्व की स्पष्टता।
- विद्यार्थियों में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति रुचि एवं समझ का विकास।

पाठ्यक्रम:

इकाई-1: वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय

- ऋग्वेद का संक्षिप्त परिचय एवं विशेषताएँ
- यजुर्वेद का संक्षिप्त परिचय एवं यज्ञीय स्वरूप
- सामवेद का संक्षिप्त परिचय एवं संगीतात्मक पक्ष
- अथर्ववेद का संक्षिप्त परिचय एवं लोकजीवन से संबंध

इकाई-2: ब्राहमण- आरण्यक साहित्य का सामान्य परिचय

- ब्राहमण ग्रंथों का सामान्य परिचय एवं महत्व
- आरण्यक ग्रंथों का परिचय एवं स्वरूप

इकाई-3: ईशावास्योपनिषद्

- ईशावास्योपनिषद् का परिचय
- मंत्रों का अध्ययन
- आत्मा एवं ब्रहम की अवधारणा
- नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएँ

इकाई-4: वेदांगों का परिचय

- शिक्षा
- कल्प
- निरुक्त
- ज्योतिष
- छन्द
- व्याकरण

संदर्भ ग्रंथ सूची

मुख्य ग्रंथ

1. ऋग्वेद गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. यजुर्वेद गोरखपुर: गीता प्रेस।
3. सामवेद गोरखपुर: गीता प्रेस।
4. अथर्ववेद गोरखपुर: गीता प्रेस।

5. ईशावास्योपनिषद् गोरखपुर: गीता प्रेस।
6. शतपथ ब्राह्मण वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
7. ऐतरेय ब्राह्मण वाराणसी: चौखम्बा।
8. तैत्तिरीय आरण्यक वाराणसी: चौखम्बा।
9. प्रमुख उपनिषद् (संकलन) गोरखपुर: गीता प्रेस।

सहायक ग्रंथ

1. उपाध्याय, बलदेव। वैदिक साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
2. शर्मा, रामशरण। वैदिक संस्कृति। नई दिल्ली: मैकमिलन।
3. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। भारतीय दर्शन। नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
4. द्विवेदी, कपिलदेव। वैदिक साहित्य और संस्कृति। वाराणसी: चौखम्बा।
5. पाण्डेय, राजबली। वैदिक धर्म एवं संस्कृति। वाराणसी: चौखम्बा।
6. हजरा, आर.सी. प्राचीन भारतीय साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा।
7. मैक्समूलर। वेदों का अध्ययन (अनुवाद)। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. वैदिक साहित्य का इतिहास — आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
9. संस्कृत साहित्य — रामाशंकर त्रिपाठी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी/दिल्ली।
10. आर्ष साहित्य विमर्श — देवदत्त शास्त्री, कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2014।
11. ईशावास्योपनिषद् — हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2014।
12. वैदिक संग्रह — लाल कृष्ण, इन्दु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973।
13. ईशावास्योपनिषद् — शास्त्री, शिवनारायण , चौखम्बा प्रकाशन, दिल्ली, 1996।
14. वैदिक साहित्य का इतिहास ऋषि उमाशंकर, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
15. ऋग्वेद संहिता, सायण भाष्य एवं हिंदी व्याख्या सहित

अधिगम परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी–

- वैदिक साहित्य के प्रमुख अंगों एवं उनके स्वरूप की पहचान कर सकेंगे।
- चारों वेदों की विशेषताओं एवं उनके योगदान को स्पष्ट कर सकेंगे।
- वैदिक धर्म एवं यज्ञ परंपरा की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- वैदिक साहित्य के सांस्कृतिक एवं दार्शनिक महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।

- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित कर सकेंगे।

दिशा- निर्देश:

- सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16
- इकाई 1 से 4 प्रश्नों में से 2 करें-10
- इकाई 2 से 4 मन्त्रों में से 2 मन्त्रों का अनुवाद प्रसंग सहित लिखें -10
- इकाई 2 में से 2 में से 1 कंठस्थ मंत्र लिखें -8
- इकाई 3 से 4 में से 2 मन्त्र का अनुवाद प्रसंग सहित लिखें -10
- इकाई 3 से 2 में से 1 सूक्त का सार लिखें - 8
- इकाई 4 से 4 में से 2 पर टिप्पणी- 8